ईसीजी जाँच की सीमाएँ समझें

शायर तो सदियों से मानते रहे हैं पर शायरों की सुनता कौन है ?

ज्ञान है तो जहान है

> डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी

शायर कहते रहे हैं कि दिल में बिजली-सी चमकती है, जो कि सिर्फ मेहबूब के दीदार या उसे याद करने में ही ऐसा होता है, यह मानना था उनका। लोग हँसते थे- खब्ती लोग कुछ तो भी, बेपर की उड़ाते हैं शायरी के आसमान में...

पर शायर भी कभी-कभी सच साबित होते हैं कि मनुष्य के हृदय में लगातार बिजली का एक करंट बहता है जिसके लिये ईश्वर ने बकायदा दिल में वायरिंग कर रखी है और इस करंट को रिकार्ड भी किया जा सकता है, यह बात उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में चिकित्सा विज्ञान को पता चली। फिर इथोवन नामक सज्जन ने 1910 में स्ट्रिंग गेल्वेनोमीटर द्वारा ईसीजी तकनीक चिकित्सा विज्ञान को दी जो आज 100 साल बाद भी हृदय रोग की जाँच की सबसे लोकप्रिय जाँच बनी हुई है।

लेकिन लोकप्रियता के अपने खतरे होते हैं, ईसीजी के साथ यही हुआ। मरीजों को इसको लेकर अनेक अंधविश्वास तथा मुगालते रहा करते हैं

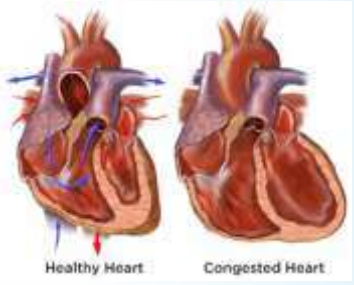

जो वास्तव में उन सम्मानीय चिकित्सकों द्वारा पैदा किये गये हैं जो स्वयं भी ईसीजी की कागजी रिकार्डिंग की पट्टीनुमा चीज़ पर किसी कानूनी पट्टे की भाँति ही अंधविश्वास सा करते हैं। कितने हार्ट अटैक के मरीज़ों को मैंने ही देखा है जिनको इमरजेंसी में यह आश्वासन देकर घर वापस भेज दिया गया कि चूँकि आपका ईसीजी ठीक है तो सब ठीक है... और कितने ऐसे दिल के रोगी भी मैं गाहे-बगाहे देखता रहता हूँ जो ईसीजी में कुछ खराबी के कारण वर्षों से दिल की दवाईयाँ खाए चले जा रहे हैं जबकि ऐसा कोई रोग उनको था ही नहीं। मैं एक ऐसे सज्जन को जानता था जो मेरे मित्र के पिता थे इनको इसी तरह की एक ईसीजी के आधार पर किन्हीं स्वनामधन्य डॉक्टर ने आईएचडी अर्थात् हार्ट अटैक की श्रेणी का कोई रोग बताया था, उनको बताया गया था कि वे मेहनत का काम करने पर मर सकते थे और एक टाईम भी दवा छोड़ने पर उनका दिल साथ छोड़ सकता था। मैंने उन्हें बहुत समझाया कि आपको हार्ट का कोई रोग नहीं, लेकिन वे अपने ईसीजी को किसी तमगे सा छाती पर चिपकाए घूमते थे। कहते कि यार डॉक्टर ने ईसीजी खराब बताया है और तुम हो कि...।

वे इसके साथ पच्चीस साल जिये, थोड़ी दूर भी जाते तो रिक्शा पकड़कर,

मेहनत का काम करने को बोल दो तो नाराज़ हो जाते कि तुम मुझे मारना चाहते हो, किसी को पीटना भी पड़ जाए तो दूसरे आदमी से कहते कि इसे हमारी तरफ से चार लातें तो मारो क्योंकि हम तो दिल के रोगी होने के कारण मेहनत का काम नहीं कर सकते न। अभी कुछ साल पहले ही उनका देहांत हुआ। क्या हार्ट अटैक से? नहीं साहब, वो तो किसी ने दुश्मनी में मर्डर कर दिया उनका... और ऐसे किस्से आप चाहे जब सुनते ही हैं कि उनका ईसीजी कल ही कराया था, बताया गया था कि एकदम बढ़िया है पर आज अचानक ही मर गए। हमारा तो ईसीजी एकदम ठीक रहता है

पर डॉक्टर फिर भी कहता है कि आपके दिल में कुछ गड़बड़ है ऐसी शिकायत भी बहुत लोग करते हैं और दुख प्रकट करते हैं कि आजकल के डॉक्टर भरोसे के क़ाबिल नहीं रह गये हैं। तो लौटें उस बात पर कि ईसीजी की जाँच पर हम कितना भरोसा करें, कितना नहीं।

हार्ट अटैक के शुरुआती घंटों में ईसीजी एकदम नार्मल (ठीक) मिल सकता है जबकि हार्ट अटैक के इलाज में शुरुआती घंटे ही सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। तब तो मर गये भैया, क्या करें यदि डॉक्टर कहता है तो अन्यथा यदि तकलीफ बनी रहे तो भी। पहले नार्मल ईसीजी के एकाध घंटे बाद भी फिर ईसीजी कराएँ। नार्मल ईसीजी का अर्थ सब ठीक न समझें, यह एक जाँच मात्र है, अमरत्व का प्रमाण-पत्र नहीं।

बहुत-सी ऐसी बीमारियाँ भी ईसीजी में ऐसे परिवर्तन पैदा कर सकती हैं जो डॉक्टर को भ्रम में डाल दें। फेफड़ों की बीमारी, थायराईड, ब्लड में पोटेशियम घटना-बढ़ना, ईसीजी रिकार्डिंग करने वाले द्वारा किसी और मरीज़ का ईसीजी आपकी फाईल में लगा देना सब कुछ संभव है।

दिल की ऐसी कई दूसरी बीमारियाँ भी हैं जो ईसीजी में हार्ट अटैक जैसा परिवर्तन बता सकती हैं जबकि आपको हार्ट अटैक का खतरा है ही नहीं। जैसे लम्बे समय से उच्च रक्तचाप हो, खासतौर पर यदि ठीक से कंट्रोल न रहता हो उसमें दिल की माँसपेशियाँ प्रेशर के खिलाफ काम कर करके मोटी हो जाती हैं जो ईसीजी में असमानता पैदा कर सकता है एकदम हार्ट अटैक जैसे।

ज़रूरी नहीं है कि जिस डॉक्टर ने ईसीजी मशीन खरीद रखी हो वह ईसीजी को गहराई से पढ़ना भी जानता हो। पता कर लें (कहाँ से ये हमें भी पता नहीं)। ईसीजी की हर जाँच को जब तक डॉक्टर मरीज़ के सम्पूर्ण क्लीनिक परिदृश्य में न देखे, तब तक इसका कोई अर्थ नहीं। इसलिए मैं उन मरीज़ों को मना कर देता हूँ जो कहीं और लिया ईसीजी लेकर मेरी सलाह लेना चाहते हैं कि सर, यह ईसीजी देख लें और बताएँ कि मरीज़ का वहाँ इलाज ठीक चल रहा है या नहीं। मरीज़ इंदौर में है और उसके चाचा जी भोपाल में ईसीजी के बूते राय जानना चाहते हैं। यह न तो मरीज़ के लिए सही है न ही डॉक्टर के लिए। मरीज़ को देखे बिना ईसीजी का कोई अर्थ नहीं।

अपना पुराना ईसीजी सँभालकर रखें। कई बार पुराने ईसीजी से तुलना करना बेहद अहम होता है, हो सकता है कि आज जिन ईसीजी असमानताओं के कारण आपको आईसीयू में भर्ती किया जा रहा है वे सब दस साल पुराने ईसीजी में भी मिल जाएँ।

कुल सलाह यह कि ईसीजी महत्वपूर्ण जाँच अवश्य है पर इसकी सीमाएँ भी हैं, जो डॉक्टर ही बेहतर समझता है। ईसीजी का इलाज कराने पर ज़ोर न दें, अच्छा डॉक्टर चुनें... और अच्छे डॉक्टर आपकी किस्मत से ही मिलते हैं। ●●●